

Shabar Mantra Sadhana Evam Siddhi

॥शाबर मंत्र साधना एवं सिद्धि॥

Sumit Girdharwal
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com
www.baglamukhi.info
www.yogeshwaranand.org

सम्पूर्ण तन्त्र शास्त्रों के प्रणेता भगवान शंकर ही माने जाते हैं। शाबर तंत्र का उद्भव भी उन्हीं भोले नाथ के मुख से ही हुआ है। ये मंत्र अंचलीय अथवा ग्रामीण भाषा में होते हैं। प्रायः देखने में आता है कि इनका कोई अर्थ उद्भाषित नहीं होता है, लेकिन इनका प्रभाव बहुत सटीक होता है।

वैदिक मंत्रों की भांति इनमें बहुत लम्बा अनुष्ठान करने की आवश्यकता नहीं होती है। इन्हें किसी विशिष्ट काल में थोड़े ही संख्या में जप करने से कार्य पूर्ण हो जाता है। इनकी साधना हेतु साधक को अल्प अवधि में, थोड़े से परिश्रम से सिद्धि प्राप्त हो जाती है। मंत्रों की सरलता और सुगमता होने के साथ-साथ ही इनमें परम चमत्कारी गुण भी विद्यमान हैं। इनमें विभिन्न प्रांतों के क्षेत्रीय भाषाओं में षट्कर्मों, जैसे-शांतिकरण, वशीकरण, आकर्षण, उच्चाटन, विद्वेषण तथा मारण कर्मों के विधानों का

उल्लेख आता है, जो साधकों के लिए वरदान स्वरूप प्रतीत होते हैं।

शाबर मंत्रों की साधना में गुरु का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसके अतिरिक्त इसमें सम्बन्धित साधक अथवा देवी-देवता को सौगंध देकर कार्य पूर्ण कराने का भी विधान है। इसी लिए मंत्रों के अन्त में 'मेरी भक्ति गुरु की शक्ति' अथवा 'लोनी चमारी की आन' जैसे वाक्य जुड़े होते हैं।

कुछ साधक पुस्तकों अथवा किन्हीं अन्य श्रोतों से मंत्र प्राप्त करके सीधे जप आरम्भ कर देते हैं, यह उचित नहीं है। कुछ मंत्र इतने प्रभावशाली होते हैं, जो साधक के लिए जी का जंजाल बन जाते हैं। अतः मेरा परामर्श है कि जब भी इन मंत्रों की साधना करें अपने गुरु से परामर्श अवश्य लें और उनके निर्देशानुसार ही साधना आरम्भ करें।

‘शाबर मंत्र की सिद्धि हेतु निम्नलिखित मंत्र का २१ बार जप करके उसके उपरान्त २१ बार ही गुग्गुल और घी की आहुति देनी चाहिए। शाबर मंत्र की सिद्धि प्रदान करने वाले इस मंत्र को मेरु मंत्र सर्वार्थ साधक कहा जाता है। मंत्र इस प्रकार है:-

‘ गुरु सठ, गुरु सठ, गुरु है वीर, गुरु साहब सुमरौं बड़ी भांता।
सिंगी टोरों बन कहौं, मन नांउ करतार। सकल गुरु की हर भजे,
घट्टा पकर उठ जाग, चेत सम्भार श्री परम हंस ॥

तदोपरान्त जिस मंत्र को आपको सिद्ध करना हो, उस मंत्र का यथा निर्देश जप विधि-विधान पूर्वक करें।

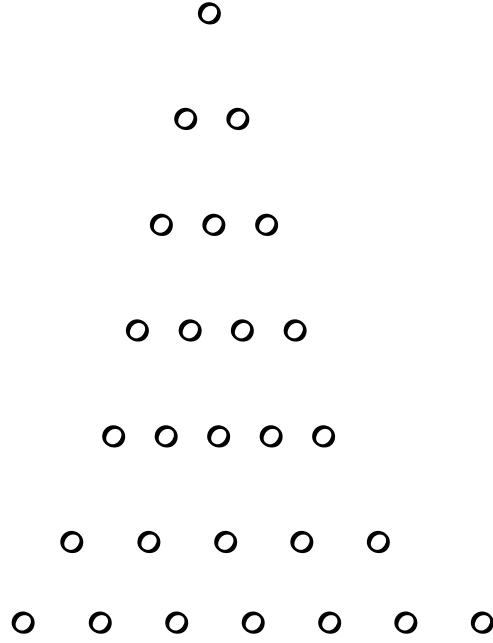
यंहा कुछ सिद्ध मंत्रों का उल्लेख मैं कर रहा हूँ ।

सम्मोहन हेतु मंत्र

ओम् क्लीं ऐं सौं ह्रीं श्रीं ग्लौं सकल जगन्मोहिनि,
मदनोन्मादिनि क्लीं एहि एहि क्लीं क्लीं सम्मोहय सम्मोहय
बुद्धिं नाशय नाशय। जीव मोहनी लागो मोह जिनु जिनु जावो
मकरे तो मोहं आदिशक्ति को आण राजा मन्मथ की आन।
फुरो आगम मंत्रो मेरी भक्ति गुरु की शक्ति ईश्वर तेरी
वाचा।।

विधान :- साधक को पहले सप्तमातृकाओं का निर्माण करके उनका पूजन अर्चन करना चाहिए। लगातार २९ दिनों तक मंत्रजाप करने से सम्मोहन सिद्ध होता है। तदोपरान्त किसी भी खाने-पीने की वस्तु पर, चंदन-सिन्दूर पर या किसी वस्त्रादि पर मात्र २९ बार मंत्र का अभिमंत्रण करने से सम्मोहन में सफलता प्राप्त होती है।

सप्तमातृकाओं का निर्माण घी में सिंदूर मिलाकर क्रमशः उपर से नीचे की ओर सात बिन्दियां बनानी चाहिए।



एक बात साधक को अवश्य ध्यान रखनी चाहिए कि ऐसे मंत्रों का प्रयोग केवल अच्छे कार्यों के लिए ही करें, क्योंकि अनुचित कार्यों में अक्सर असफलता ही प्राप्त होती है। ईश्वर उनकी ही मदद करते हैं, जो सत्कार्यों का निष्पादन करना जानते हैं।

वशीकरण हेतु मंत्र

इस मंत्र को सुगम-श्यामल मंत्र कहा जाता है। त्रैलोक्य को वशीभूत करने हेतु इस मंत्र का प्रयोग किया जाता है। आपने देखा होगा कि किसी-किसी साधु, प्रवचन कर्ता, कथा वाचक अथवा किसी सन्यासी के प्रवचन करने के समय जबरदस्त संख्या में लोगों की भीड़ उपस्थित रहती है। यदि

सामान्य रूप से देखा जाये तो प्रवचनों में कोई विशेष बात नहीं रहती, केवल वहीं बातें रहती हैं, जिससे हर कोई व्यक्ति परिचित रहता है। परन्तु ऐसी ही बातें सुनकर लोगों की भीड़ बनी रहती हैं। यह सामान्यतः वशीकरण द्वारा ही सम्भव है। यूं तो ऐसे अनेकों मंत्र हैं, परन्तु यंहा जो मंत्र मैं लिख रहा हूँ, वह उच्च कोटि का शाबर मंत्र है और इस मंत्र के प्रभाव से किसी भी जन का बचना सम्भव नहीं है।

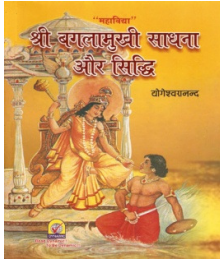
**मंत्र :- ओम् ऐं क्लीं सौं सर्वजन-मनोहारिणि मतंग कुल
मंगलांगि असकृन्मदिरा-वोद-वदने अनौपम्य-चरिते ऐं क्लीं ह्रीं
गुला-मातंगी जन-मनोरंजनकारि मनभेदि भगवती गुवुक्ति-काम
गति फुरो ईश्वर मन्त्रते वीरवाचा।।**

विधान:- इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए साधक को चाहिए कि वह किसी काली, चंडिका अथवा मातृका के मंदिर में कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि से लेकर कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि तक प्रातः, मध्यान्ह एवं सायं काल, अर्थात् तीनों संध्या काल में इस मंत्र का एक सौ की संख्या में जप करना चाहिए। इसके बाद चंडिका मंदिर में ही उपरोक्त मंत्र के द्वारा कनेर के फूलों से उनका पूजन करना चाहिए। इस मंत्र से अभिमंत्रित चंदन, भस्म आदि का तिलक करने से त्रैलोक्य भी साधक के वशीभूत हो जाता है।

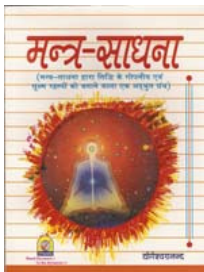
साधक को चाहिए कि कंही भी जाने से पूर्व उपरोक्त मंत्र का एक सौ आठ बार जप करके ही जाए। इससे कार्य की सिद्धि अवश्य ही होती है। किसी विशेष कार्य पर जाने से पूर्व उसे चंदन, भस्म, अक्षत तथा सिंदूर आदि को २१ बार अभिमंत्रित करके धारण करने से सर्व जन का वशीकरण होता है और साधक को उसके कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

Books written by Shri Yogeshwaranand Ji

1. Mahavidya Shri Baglamukhi Sadhna Aur Siddhi



2. Mantra Sadhana



Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

3. Shodashi Mahavidya (Tripursundari Sadhana)



4. Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya

Shri Baglamukhi Sadhana Rahasya is the upcoming book of my father and my guru Shri Yogeshwaranand Ji on Ma Baglamukhi. Only limited copies of this book are going to be published. If you want to secure your copy before all sold out please make a payment of Rs 680 into the below A/C Sumit Girdharwal

Axis Bank

912020029471298

IFSC Code – UTIB0001094

After payment send your complete address and payment receipt to shaktisadhna@yahoo.com & sumitgirdharwal@yahoo.com. For more details please call on +91-9540674788, 91-9410030994

Feedback & Support

I am very pleased to say that we are taking a next step ahead in the field of spirituality by digitalizing all the available Sanskrit texts in the world related to secret mantras, tantras and yantras. In the first phase we will

Sumit Girdharwal Ji & Shri Yogeshwaranand Ji
9540674788, 9410030994
sumitgirdharwal@yahoo.com, shaktisadhna@yahoo.com
www.baglamukhi.net, www.yogeshwaranand.org

digitalize all the content provided by Shri Yogeshwaranand Ji regarding das mahavidyas. We will not only make it available for Hindi and Sanskrit readers but also translate it into English so that whole world can get the benefits from our work. I can't do it alone. I request all of you to help me achieve this goal.

Requirement

1. We need a person who can write articles in Hindi and Sanskrit in software like Adobe Indesign (Preferable font chanakya) or Microsoft Office (Font Used Kruti Dev 020, Chanakya)
2. We need a graphic designer who can create good pictures to summarize the content.
3. We need an English translator who can translate these articles into English
4. Any donation will be appreciated which is highly needed for this project.

My dear readers! Very soon We are going to start an E-mail based monthly magazine related to tantras, mantras and yantras including practical uses for human welfare. I request you to appreciate me, so that I can change my dreams into reality regarding the service of humanity through blessings of our saints and through the grace of Ma Pitambara. Please make registered to yourself and your friends. For registration email me at sumitgirdharwal@yahoo.com Thanks